प्रिय प्रताप,

तुम कैसे हो ? दिल्ली में सब ठीक चल रहा है ? मैं बहुत देर के बाद यह ख़त लिख रही हूँ। तुम जानते होगे कि मैं भी हिन्दी सीखने के लिए भारत आने का प्रोग्राम बना रही हूँ। मुझे आशा है कि बहुत ध्यान से पढ़ने के बाद मैं भी तुम्हारी तरह अच्छी हिन्दी सीखूँगी । कम से कम यही तो इरादा है। हिन्दी समझना एक बात है लेकिन रवानी से बोलना दूसरी बात ! मेरी सहेली राजेश्वरी को जानते हो न ? उसकी बहिन उषा वाराणसी में रहती है । मैं उसी के साथ ठहरूँगी । उसका घर कॉलेज से काफी दूर है; कालेज तो रामनगर में है, महाराजा के महल के नज़दीक, और उषा का घर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बी० एच० यू०) के अन्दर है । बी० एच० यू० के आस-पास बहुत-से विद्यार्थी रहते होंगे । वे रिक्शे से कालेज जाते होंगे; मैं भी उन्हीं के साथ जाऊँगी । पिताजी कहते हैं कि मेरा अकेले जाना ठीक न होगा क्योंकि वाराणसी के नौजवान बहुत गुंडागर्दी मचाते हैं और लड़कियों को तंग करते हैं । इसको "ईव-टीज़िंग" कहते हैं, न ?

1- **Metinde geçen gramer kuralların analizini yaparak Türkçeye çevirmek.**